

सामाजिक समस्याएँ और समाजशास्त्र की उपयोगिता

गजेन्द्र कुमार मालवीय

सह- आचार्य समाजशास्त्र, विभागाध्यक्ष,

समाजशास्त्र विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झालावाड़ (राज.)

सार

समाजशास्त्र की मदद से सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है और उनके समाधान के लिए उपाय सुझाए जाते हैं। समाजशास्त्र, समाज और लोगों के संबंधों को समझने में मदद करता है। समाजशास्त्र की मदद से सामाजिक समस्याओं को समझने के लिए एक अलग दृष्टिकोण अपनाया जाता है।

समाजशास्त्र की उपयोगिता:

समाजशास्त्र से समाज और लोगों के संबंधों को समझने में मदद मिलती है।

समाजशास्त्र से सामाजिक वास्तविकताओं की गहरी समझ मिलती है। समाजशास्त्र से व्यक्तियों और संस्थाओं को जटिल सामाजिक मुद्दों को समझने और उनका समाधान करने में मदद मिलती है।

समाजशास्त्र से सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी परिवर्तन करने के लिए शोध किया जाता है।

समाजशास्त्र से विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच मतभेदों के कारणों की जांच की जाती है।

समाजशास्त्र से सामाजिक असमानताओं को आर्थिक, राजनीतिक और अन्य प्रकार की शक्ति से जोड़ा जाता है।

समाजशास्त्र से सामाजिक स्थिरता और समाज की प्रगति के बारे में जानकारी मिलती है।

समाजशास्त्र से व्यक्ति की संकीर्णता को समाप्त कर व्यापक दृष्टिकोण को बनाने में मदद मिलती है।

समाजशास्त्र से बंधुत्व की भावना और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने में मदद मिलती है।

परिचय

आज मानव समाज ने तकनीकी व आर्थिक क्षेत्रों में बहुत प्रगति की है। लोगों के जीवन स्तर, जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और जीवन आयु में वृद्धि हुई है। रहन-सहन की दशाएँ पहले से बहुत बेहतर हुई हैं, किन्तु सभ्यता के इस दौर में जहाँ हमारी अनेक समस्याएँ हल हुई हैं वहीं अनेक नई समस्याएँ पैदा भी हुई हैं। आधुनिक

समाज जटिल से जटिलतर होता जा रहा है। संबंधों की प्रकृति बदल रही है। तकनीकी प्रगति के साथ समाज में जो नई समस्याएँ पैदा हुई हैं उनसे समाज दिन व दिन असुरक्षित होता जा रहा है। इस बात में कोई शक नहीं है कि उच्च तकनीकी समाज जिसकी ओर हम तेजी से बढ़ रहे हैं, के सम्मुख कठिन चुनौतियाँ और समस्याएँ उपस्थित होंगी और तकनीकी समाज अधिक अस्थिर और अधिक असुरक्षित होगा। समाजशास्त्र के अध्ययन के द्वारा ही हम इन समस्याओं को ठीक से समझ सकते हैं और उन्हें सुलझा सकते हैं। समाजशास्त्र एक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान है। विशेषतः विकासशील देशों में पुनर्निर्माण संबंधी विभिन्न योजनाओं को सफल बनाने में समाजशास्त्रीय ज्ञान विशेष उपयोगी है।

समाजशास्त्र के अध्ययन का महत्व अथवा उपयोगिता निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है--

1. समाज का वैज्ञानिक ज्ञान

समाजशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण कार्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा वैज्ञानिक पद्धतियों की सहायता से मानव समाज का व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करना है। विभिन्न समाजशास्त्रीय अध्ययन सामाजिक घटनाओं के कार्य-करण संबंधों को स्पष्ट करके सामाजिक संस्थाओं तथा सामाजिक संबंधों में होने वाले परिवर्तनों की विवेचन करते हैं। इसके अतिरिक्त व्यवस्थित रूप से उन सामाजिक इकाइयों को स्पष्ट करते हैं जिनका किसी सामाजिक संरचना के निर्माण में विशेष योगदान होता है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति को अपने समाज से संबंधित सामाजिक मूल्यों, व्यवहार के नियमों, धर्म, परम्परा और संस्कृति जैसे भावनात्मक पक्षों को भी तार्किक आधार पर समझने में सहायता मिलती है। [1.2.3]

2. अन्तर्राष्ट्रीय जीवन को शांतिपूर्ण बनाने में सहायता

समाजशास्त्र के अध्ययन की उपयोगिता केवल इसलिए ही नहीं है कि यह हमारे समाज के संबंध में वैज्ञानिक ज्ञान उपलब्ध कराता है, परन्तु यह विश्व के विभिन्न समाजों से भी हमें परिचित कराता है।

3. व्यवसाय में सहायता

आधुनिक युग में समाजशास्त्र का अध्ययन व्यवसाय की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हो सकता है। इसका कारण यह है कि आज के समाज का निर्माण करने के लिए प्रशिक्षित सामाजिक अनुसंधानकर्ताओं की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज के समाज के लिए श्रम अधिकारी, श्रम कल्याण अधिकारी, मानव संबंध अधिकारी, आदि की माँग में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

4. श्रम समस्याओं के निराकरण में सहायक

विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में औद्योगीकरण तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है। आज भारत जैसा कृषि प्रधान समाज भी औद्योगीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है। औद्योगिक समाजों में पूंजीपति और श्रमिक वर्ग के बीच तनाव और संघर्ष की स्थिति पायी जाती है। पूंजीपति और श्रमिक वर्ग के हित एक-दूसरे से टकराते हैं। आज औद्योगिक क्षेत्रों में अनेक समस्याएं पायी जाती हैं, जैसे हड़ताल घेराव, तालाबन्दी, श्रमिक तनाव, काम की अस्वास्थ्यकर दशाएँ, मालिक और मजदूर के झगड़े, उचित मजदूरी की समस्या कार्यशील महिलाओं की समस्याएँ आदि। जब तक इन समस्याओं को हल नहीं किया जाता तब तक औद्योगिक क्षेत्र में न तो उत्पादन ही बढ़ाया जा सकता और न ही राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाया जा सकता है। इन समस्याओं को समझने और इनके निराकरण में समाजशास्त्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यही कारण है कि आज समाजशास्त्र का विकास हुआ है। आज भारत में अनेक श्रम कल्याण सम्बन्धी योजनाएँ

चल रही हैं। इन योजनाओं का सफल क्रियान्वयन बहुत कुछ समाजशास्त्रीय ज्ञान पर निर्भर करता है। [4,5,6] औद्योगिक क्षेत्र में समाजशास्त्र का महत्व इसी से स्पष्ट है कि आज श्रम कल्याण अधि कारी के रूप में औद्योगिक समाजशास्त्र के विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जाती है।

5. पारिवारिक संगठन में सहायता

प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही परिवार का सदस्य होता है। प्रत्येक व्यक्ति की उसके परिवार में एक निश्चित स्थिति होती है और उसी के अनुसार उसके कार्य भी निश्चित होते हैं। पारिवारिक संगठन तभी तक बना रह सकता है जब तक उसके सदस्य अपनी स्थिति एवं कार्य के संबंध में ज्ञान प्राप्त करते हैं।

6. संस्कृति के संरक्षण तथा विकास में सहायक

समाजशास्त्र एक ऐसा विषय है जो हमें संस्कृति के विभिन्न तत्वों जैसे धर्म, परम्परा, प्रथाओं, सांस्कृतिक मूल्यों, संस्थाओं तथा शिष्टाचार के तरीकों को अधिक तार्किक और वस्तुपरक ढंग से समझने में सहायता करता है। योगेन्द्र सिंह ने इस तथ्य को भारत में परम्परा तथा आधुनिकता की निरन्तरता के द्वारा स्पष्ट किया। वास्तविकता यह है कि संसार की किसी भी संस्कृति को एक-दूसरे से अच्छा बुरा नहीं कहा जा सकता। सभी समाज अपनी परम्पराओं का सम्मान करते हैं। इसके बाद भी यह सच है कि सभी समाजों में आधुनिकता के लक्षण बढ़ने के साथ एक ऐसे विश्वव्यापी दृष्टिकोण का भी विकास हुआ है जिसके कारण परम्पराओं में परिवर्तन की प्रवृत्ति स्पष्ट होने लगी है। समाजशास्त्र का ज्ञान हमें परम्परा तथा आधुनिकता की निरन्तरता को बनाये रखने वाले तत्वों को समझने में सहायता देता है। [7,8,9]

7. सामाजिक अनुकूलन में सहायता

आधुनिक युग में परिवर्तन अत्यंत द्रुत गति से हो रहे हैं। सफल जीवन व्यतीत करने के लिए इन परिवर्तनों से अनुकूलन करना मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। समाजशास्त्र इन परिस्थितियों में अनुकूलन करना सिखाता है, इसलिए इसका अध्ययन आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

8. सामाजिक समस्याओं को हल करने में सहायक

आधुनिक समाज अत्यधिक जटिल है। जटिल समाजों में समस्याएँ भी अत्यधिक होती हैं। समाजशास्त्र सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन कर उनके निराकरण हेतु उपाय सुझाता है। इस प्रकार सामाजिक समस्याओं को हल करने में समाजशास्त्र सहायक है।

9. भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकीकरण

भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकीकरण वर्तमान समय में उन समाजों के सबसे जरूरी हैं जिनमें एक-दूसरे से भिन्न धर्म, संस्कृतियों, प्रजातियों, विश्वासों और मनोवृत्तियों वाले लोग साथ-साथ रहते हैं। समाजशास्त्रीय अध्ययन विभिन्न धर्म, संस्कृतियों तथा प्रजातियों की एकता संबंधी विशेषताओं को स्पष्ट करते हैं। इससे सभी समुदायों को एक-दूसरे के निकट आने का अवसर तथा संजातीयता की समस्या का प्रभावपूर्ण समाधान करने में व्यापक सफलता प्राप्त हो सकी।

समाजशास्त्र एक तार्किक और निष्पक्ष दृष्टिकोण के द्वारा भी समाज में भावात्मक एकीकरण बढ़ाने का प्रमुख आधार है।

10. ग्रामीण पुनर्निर्माण में सहायक

भारत की अधिकांश जनसंख्या आज भी ग्रामों में निवास करती है और ग्राम पिछले करीब 55 वर्षों के नियोजित प्रयत्नों के बावजूद आज भी अनेक समस्याओं से ग्रस्त हैं। ग्रामों में निर्धनता, बेकारी, कृषि का पिछड़ापन, परम्परागत पेशों पर निर्भरता, ऋणग्रस्तता, जातिवाद, ऊँच-नीच अस्पृश्यता, अन्धविश्वास बाल विवाह पर्दा प्रथा आदि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याएँ पायी जाती हैं। इन सब ग्रामीण समस्याओं को उस समय तक नहीं सुलझाया जा सकता जब तक कि ग्रामीण सामाजिक संरचना का समाजशास्त्रीय ढंग से अध्ययन नहीं किया जाता। ग्रामीण समाज के सम्बन्ध में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करके ही इन समस्याओं की प्रकृति को समझा और इनका निराकरण किया जा सकता है यही कारण है कि समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में ग्रामीण समाजशास्त्र का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है समाजशास्त्रीय ज्ञान के आधार पर ग्रामीणों की सामाजिक सांस्कृतिक परम्पराओं को जानकर ही ग्रामीण पुनर्निर्माण की विभिन्न योजनाओं को सफल बनाया जा सकता है स्पष्ट है कि ग्रामीण पुनर्निर्माण की दृष्टि से समाजशास्त्र की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। [10,11,12]

11. नगरीय विकास में सहायक

वर्तमान समय में औद्योगीकरण की तेज गति के कारण नगरीकरण की प्रक्रिया भी काफी तेजी से चल रही है। शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा सुविधा, कचहरी, उद्योग-धन्धे और विभिन्न सुविधाएँ ग्रामीणों को नगरों की ओर आकर्षित करती जा रही हैं परिणामस्वरूप नगरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। जिस गति से औद्योगीकरण और नगरीकरण होता जा रहा है। उसके साथ-साथ विशेषतः नगरों के स्वस्थ और सन्तुलित विकास की समस्या उठ खड़ी हुई है। आज नगरों में अनेक समस्याएँ पायी जाती हैं जैसे घनी बस्तियाँ, भीड़-भाड़युक्त वातावरण, मद्यपान, जुआ अपराध, बाल अपराध भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति आदि। वर्तमान में नगरों का भौतिक विकास तो तेजी से साथ होता जा रहा है, परन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से नगर पिछड़ते जा रहे हैं, नैतिकता का हास होता जा रहा है। परिणामस्वरूप नगरों में सांस्कृतिक पिछड़ की स्थिति पायी जाती है जो विभिन्न प्रकार के असन्तुलनों एवं संघर्षों के लिए उत्तरदायी है। इन सब समस्याओं के निराकरण एवं स्वस्थ आधार पर नगरीय विकास के लिए समाजशास्त्रीय ज्ञान का लाभ उठाना अत्यन्त आवश्यक है। यही कारण है कि आज समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में नगरीय समाजशास्त्र का महत्त्व बढ़ता ही जा रहा है।

विचार-विमर्श

सामाजिक समस्या की अवधारणा ने विकास और परिवर्तन की पृष्ठभूमि में एक नए विषय के रूप में समाजशास्त्र के उद्भव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाजशास्त्र का विकास समस्याग्रस्त वातावरण और परिस्थितियों के अध्ययन और समाधान के प्रयासों के रूप में हुआ है।

सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में सामाजिक विचारकों का ध्यान आकर्षित किया गया है क्योंकि यह सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है।

मानव समाज कभी भी सामाजिक समस्याओं से पूरी तरह मुक्त नहीं हुआ है और न ही निकट भविष्य में रहने की संभावना दिखाई देती है, लेकिन यह निश्चित है कि संचार की क्रांति और आधुनिक समय में मौजूद शिक्षा के प्रति लोगों की जागरूकता के परिणामस्वरूप, मनुष्य संवेदनशील हो गया और इन समस्याओं से अवगत हैं। सामाजिक समस्या का अर्थ समझने के लिए हमें सामाजिक और समस्या शब्द का अर्थ समझना उचित होगा। जब भी हम 'सामाजिक' शब्द का प्रयोग करते हैं, तो इसका अर्थ मानवीय संबंध, सामाजिक संरचना, संगठन आदि से होता है। समस्या ऐसे अवांछनीय और अनुचित व्यवहार या प्रथाओं को संदर्भित करती है, जो सामाजिक व्यवस्था में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न करती है। इसलिए, सामाजिक संगठन, सामाजिक संरचना या मानवीय संबंधों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को सामाजिक समस्याएँ कहा जाता है।

सामाजिक समस्या हमेशा अलग होती है। इससे सामाजिक संगठन में उथल-पुथल हो सकती है और नियमित और सामान्य जीवन बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। सामाजिक समस्या न केवल किसी विशेष स्थिति का सूचक

है, बल्कि उस स्थिति की गंभीरता के बारे में सामाजिक चेतना या सामाजिक सरोकार भी दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। [13,14,15]

सामाजिक समस्या को और भी स्पष्ट करने के लिए कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाओं का उल्लेख कर सकते हैं-

"सामाजिक समस्या व्यवहार का एक ऐसा रूप है जिससे समाज का एक बड़ा भाग व्यापक रूप से स्वीकृत एवं अनुमोदित मानदण्डों का उल्लंघन माना जाता है।"

वीन वर्ग ने सामाजिक समस्या के निम्नलिखित घटकों का उल्लेख किया है:-

व्यवहार प्रतिमान जिसे समाज के अधिकांश लोग आपत्तिजनक मानते हैं, आपत्तिजनक सामाजिक समस्या कहलाते हैं।

सामाजिक समस्याएं समय, स्थिति, समय और सामाजिक दृष्टिकोण के आधार पर बदलती रहती हैं।

जनसंचार का माध्यम - दूरदर्शन, समाचार पत्र और पत्रिकाएँ, रेडियो, फिल्म, सामाजिक समस्याओं के बारे में समाज में जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक समस्या सामाजिक प्रतिमान और सामाजिक मूल्य के सापेक्ष है।

सामाजिक संबंधों पर इसके प्रभाव को ध्यान में रखते हुए सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है।
परिणाम

फुलर ने सामाजिक समस्या के विश्लेषण में तीन तत्वों को प्रधानता दी है-

चेतना

नीति निर्धारण

सुधार

चेतना -चेतना समाज के अधिकांश लोगों के विश्वास और विश्वास को संदर्भित करती है कि समाज की ऐसी स्थिति या स्थिति समाज में मान्यता प्राप्त मानदंडों और संस्थागत मानदंडों के विपरीत व्यवहार है और इसे हटाने और उन्मूलन के लिए उचित प्रयासों की आवश्यकता है। अन्यथा यह समाज को विघटित कर सकता है।
[16,17,18]

नीति निर्धारण -

समाज में सामाजिक समस्याओं के अस्तित्व को स्वीकार करने के बाद इसके निवारण और उन्मूलन के लिए लोगों से सुझाव मांगे जाते हैं और समितियों का गठन किया जाता है। उनके द्वारा सुझाए गए कई सुझावों में से कुछ सुझावों के व्यावहारिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, उल्लिखित सामाजिक समस्या के समाधान और उन्मूलन के लिए वांछित प्रयास किए जाते हैं और उक्त विषय में एक स्पष्ट नीति निर्धारित की जाती है।

सुधार -

सामाजिक समस्या के उपयुक्त साधनों का निर्धारण करने के बाद उनका व्यावहारिक रूप से उपयोग किया जाता है और वांछित सुधार लाने का प्रयास किया जाता है।

सामाजिक समस्या के प्रकार :-

जोन जे. केन ने सामाजिक समस्याओं को दो भागों में बांटा है:-

प्रकट सामाजिक समस्याएं

प्रच्छन्न/गुप्त सामाजिक समस्याएं

प्रकट सामाजिक समस्या -

प्रकट सामाजिक समस्या एक अवांछित सामाजिक स्थिति है जिसमें 'राज्य या निजी एजेंसियों या दोनों द्वारा उपचारात्मक प्रयास किए जाते हैं। आम आदमी को प्रकट सामाजिक समस्या से अवगत और जागरूक किया जाता है और लोगों को यह विश्वास हो जाता है कि ऐसी स्थिति समाज के अस्तित्व और बुनियादी प्रणालियों के सुचारु संचालन के लिए खतरा है।

सामाजिक समस्याएं जैसे अपराध, बाल अपराध, शराब, बेरोजगारी, जनसंख्या, विस्फोट, निर्धनता आदि इस श्रेणी में शामिल हैं।

प्रच्छन्न / गुप्त सामाजिक समस्या -

गुप्त सामाजिक समस्या समाज की वह अवांछित स्थिति है, जिसके

समाधान के लिए अभी तक कोई उपचारात्मक प्रयास नहीं किया गया है, फिर भी यह समाज के लिए खतरा होता।
[18,19,20]

वास्तव में प्रच्छन्न सामाजिक समस्या वास्तविक रूप में, वास्तविकता के धरातल पर है, जो समाज के लिए किसी प्रकार का खतरा उत्पन्न नहीं करती है, लेकिन समाज का एक वर्ग इसे समाज के अस्तित्व के लिए भयावह मानता है।

यह तब तक सामाजिक समस्या नहीं लगती जब तक इसके बारे में लोगों में जागरूकता और जागरूकता पैदा नहीं की जाती है और इसे मिटाने के लिए सामूहिक प्रयास नहीं किए जाते हैं, लेकिन जब इन समस्याओं के बारे में समाज में जागरूकता पैदा होती है, तो यह प्रकट सामाजिक समस्याओं का रूप ले लेती है। और उन्हें सुलझाने और हल करने के लिए समाज द्वारा वांछित प्रयास किए जाते हैं।

इस संदर्भ में यह उल्लेख करना उचित होगा कि छुआछूत, सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, असमानता सदियों से अव्यक्त सामाजिक समस्याएँ थीं, लेकिन धीरे-धीरे समाज में जागरूकता आने के बाद, निजी संगठनों और समाज के नेताओं ने सामूहिक प्रयास किए। उनका समाधान और उन्मूलन।

सामाजिक समस्याओं के कारण :-

सामाजिक समस्याएं कई कारकों और कारणों से उत्पन्न होती हैं। समस्या की प्रकृति को समझकर ही कारणों का पता लगाया जा सकता है। प्रमुख सामाजिक वैज्ञानिकों के विचारों का उल्लेख है। रॉबर्ट ए. निश्वेट ने सामाजिक समस्या के मूल में चार प्रमुख कारणों का उल्लेख किया है। ये इस प्रकार हैं:-

सामाजिक गतिशीलता

व्यक्तिवादी दृष्टिकोण

व्याधिकीय स्थिति

रोब और शैलज़निक ने अपनी पुस्तक 'major social problem' में सामाजिक समस्याओं के पांच प्रमुख कारणों की रूपरेखा तैयार की है। ये इस प्रकार हैं:-

पारस्परिक संबंधों को सुचारु रूप से संचालित करने और विनियमित करने के लिए संगठित समाज में लोगों की क्षमता का नुकसान। समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से उचित तरीके से और समान रूप से समाज के मानदंडों और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित नहीं किया जाना।

समाज के अधिकांश सदस्यों की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं की संरचना में सामंजस्य का अभाव। समाज की संस्थाओं में विचलन पाया जाना। समाज के सदस्यों द्वारा समाज के मानदंडों और नियमों का उल्लंघन। पॉल लैंडिस ने सामाजिक समस्याओं के चार प्रमुख कारणों का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैं: [19,20]

व्यक्तिगत समायोजन में असफल होना।

संस्थागत समायोजन में विफलता का अस्तित्व ।

सामाजिक समस्या का दोष। वस्तुतः एक नवीन विषय के रूप में समाजशास्त्र के उद्भव, विकास एवं परिवर्तन की पृष्ठभूमि में सामाजिक समस्या (सामाजिक मुद्दा या सामाजिक समस्या) की अवधारणा ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया

सामाजिक नीतियों में संस्थागत देरी।

है। समाजशास्त्र का विकास समस्यामूलक परिवेश एवं परिस्थितियों का अध्ययन करने एवं इनका निराकरण करने के प्रयासों के रूप में हुआ है। सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में सामाजिक विचारकों का ध्यान सहज रूप से इसलिए आकर्षित हुआ है क्योंकि ये सामाजिक जीवन का अविभाज्य अंग हैं। मानव समाज न तो कभी सामाजिक समस्याओं से पूर्ण मुक्त रहा है और न ही रहने की सम्भावना निकट भविष्य में नजर आती है, परन्तु इतना तो निश्चित है कि आधुनिक समय में विद्यमान संचार की क्रान्ति तथा शिक्षा के प्रति लोगों की जागरूकता के फलस्वरूप मनुष्य इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील एवं सजग हो गया है। सामाजिक समस्याओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने में जन संचार के माध्यम, यथा-टेलीविजन, अखबार एवं रेडियो ने अति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। मुख्यतः टेलीविजन पर प्रसारित विभिन्न चैनलों के कार्यक्रमों तथा स्थानीय, प्रादेशिक एवं अन्तर्राज्यीय अखबारों की भूमिका प्रशंसनीय है।

मानव समाज में संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएं पाई जाती हैं। परन्तु भिन्न भिन्न समाजों में इनका स्वरूप, प्रकृति एवं गहनता अलग-अलग होती है। सामाजिक समस्याओं का सम्बन्ध समाजशास्त्र विषय के अन्तर्गत विद्यमान गत्यात्मक एवं परिवर्तन विषय से सम्बद्ध रहा है।

जो समाज जितना अधिक गत्यात्मक एवं परिवर्तनशील होगा उसमें उतनी ही अधिक समस्याएं विद्यमान होंगी। समाज का ताना-बाना इतना जटिल है कि इसकी एक इकाई में होने वाला परिवर्तन अन्य इकाईयों को भी प्रभावित करता है। इस परिवर्तन का स्वरूप क्या होगा? एवं इसके प्रभाव क्या होंगे?, यह समाज की प्रकृति पर निर्भर करता है। विभिन्न युगों में सामाजिक परिवर्तन की गति अलग-अलग रही है। इसलिए भिन्न-भिन्न समाजों में सामाजिक समस्याओं की प्रकृति एवं स्वरूप भी अलग-अलग पाये जाते हैं। वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन अति तीव्र गति से हो रहा है। इस तरह बदलते आधुनिक समाज के स्वरूप ने सामाजिक समस्याओं को म बतलाया

समाज इन सामाजिक सामाजिक समस्याएं सामाजिक व्यवस्था में विघटन पैदा करती हैं जिससे समस्याओं का उन्मूलन करने के लिए सदैव प्रयासरत रहा है, क्योंकि समाज के अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाता है।

समाजशास्त्र मानव समाज को निर्मित करने वाली इकाईयों एवं इसे बनाए रखने वाली संरचनाओं तथा संस्थाओं का अध्ययन अनेक रूपों से करता है। समाजशास्त्रियों एवं सामाजिक विचारकों ने अपनी रुचि के अनुसार समाज के स्वरूपों संरचनाओं संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन किया है। समस्या विहीन समाज की कल्पना करना असम्भव सा प्रतीत होता है। [19]

वर्तमान समय में भारतीय समाज अनेक सामाजिक समस्याओं से पीड़ित है जिनके निराकरण के लिए राज्य एवं समाज द्वारा मिलकर प्रयास किये जा रहे हैं। भारतीय समाज की प्रमुख समस्याओं में जनसंख्या में बढ़ती, निर्धनता, बेरोजगारी, असमानता, अशिक्षा, गरीबी, आतंकवाद, घुसपैठ, बाल श्रमिक, श्रमिक असंतोष, छात्र असंतोष, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, जानलेवा बीमारियां, दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण बालिका हत्या, विवाह-विच्छेद की समस्या, बाल अपराध, मद्यपान, जातिवाद, अस्पृश्यता की समस्या ये सभी सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत आती हैं। सामाजिक समस्याओं के निराकरण के लिए यह अत्यावश्यक है कि इनकी प्रकृति को समझा जाए एवं स्वरूपों की व्याख्या की जाए। भिन्न-भिन्न सामाजिक समस्याओं के मध्य पाए जाने वाले परस्पर सम्बन्धों का विश्लेषण एवं अनुशीलन कर हम इन समस्याओं के व्यावहारिक निराकरण के लिए एक नई सोच प्रस्तुत कर सकते हैं।

निष्कर्ष

सामाजिक समस्याएं किसी भी समाज की स्थितियां और दशाएँ हैं जो समाज के अस्तित्व, अन्योन्याश्रयता, ताकत और स्थापित मूल्यों के लिए खतरा हैं। सामाजिक समस्याएँ सामूहिक कल्याण में बाधाएँ उत्पन्न कर समाज को जागरूक एवं सचेतन बनाती हैं तथा उसके समाधान एवं समाधान के लिए वांछित प्रयास किये जाते हैं। [20]

संदर्भ

- 1) गिडेंस, एंथोनी, डनेर, मिशेल, एप्पल बाम, रिचर्ड. 2007 इंटरडिक्शन टू सोशियॉलोजी, छठा संस्करण, न्यू यॉर्क: डबल्यू डबल्यू नोर्टन और कंपनी
- 2) Ashley D, Orenstein DM (2005). Sociological theory: Classical statements (6th ed.) samajshastra ki vaigyanik Prakriti ke. Boston, MA, USA. पृ. 3-5, 32-36.
- 3) Ashley D, Orenstein DM (2005). Sociological theory: Classical statements (6th ed.). Boston, MA, USA: Pearson Education. पृ. 3-5, 38-40.
- 4) एच. मोलाना (2001) "अरब विश्व में सूचना", कोओपरेशन साउथ

जर्नल 1.

5) डॉ.एस. डबल्यू. अखतर (1997). "इस्लामिक ज्ञान की संकल्पना", अल तौहिद : इस्लामी विचार एवं संस्कृति की एक त्रैमासिक पत्रिका 12 (8).

6) एम्बर हक (2004)m, "इस्लामी नज़रिए से मनोविज्ञान समकालीन मुस्लिम मनोवैज्ञानिक के लिए आरंभिक मुस्लिम विद्वानों का

योगदान और चुनौती", धर्म और स्वास्थ्य के समाचार पत्र 43

(4):357-877[375].

7) Enan, Muhammed Abdullah (2007), Ibn Khaldun: His Life

and Works, The Other Press, पृ. v, आई.एस.बी.एन.

9859541556 8) Alatas, S. H. (2006), "The Autonomous, the Universal and

the Future of Sociology", Current Sociology, 54: 7-23 [15], आई.एस.एस.एन. 0011-8921,

डीओआई:10.1177/0011392106058831

9) Des Manuscrits de Sieyès 1773-1799, खंड 1 और 11, क्रिस्टीन फुर द्वारा प्रकाशित, जैक्स गिलहाउमो, Jacques Vallier et Françoise Weil, Paris, Champion>, 1999 और 2007. क्रिस्टीन फुरे और जैक्स गिलहाउमो, Sieyès et le non-dit de la sociologie: du mot à la chose, in Revue d'histoire des sciences humaines, Numéro 15, novembre 2006; Naissances de la science sociale भी देखें फ्रेंच भाषा के विकिपीडिया में भी लेख 'सोशियोलोजी' देखें.

10) समाजशास्त्र का एक शब्दकोष, अनुच्छेद: कॉम्ट, अगस्टे

11) सन्दर्भ त्रुटि: <ref> का गलत प्रयोग; comte नाम के संदर्भ में जानकारी नहीं है।

12) "University of Kansas Sociology Department Webpage". Kuzedu. मूल से 27 जून 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अप्रैल 2009.

15) "University of Kansas News Story". News.ku.edu. 15 जून 2005. मूल से 4 दिसंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अप्रैल 2009.

- 14) "American Journal of Sociology Website". Journals.uchicago.edu. 1 जनवरी 1970, मूल से 11 नवंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अप्रैल 2009.
- 15) "British Journal of Sociology Website". Lsc.ac.uk. 2 अप्रैल 2009. मूल से 23 अक्टूबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अप्रैल 2009.
- 16) <http://www.isa-sociology.org/> Archived 2009-12-07 at the वेबैक मशीन International Sociological Association वेबसाइट
- 17) Ashley D, Orenstein DM (2005). Sociological theory: Classical statements (6th ed.). Boston, MA, USA: Pearson Education. पृ. 94.
- 18) Ashley D, Orenstein DM (2005). Sociological theory: Classical statements (6th ed.). Boston, MA, USA: Pearson Education. पृ. 94-98, 100-104.
- 19) फिश, जोनाथन एस. 2005. 'दुर्खीमियन परंपरा का बचाव करते हुए. धर्म, जज्बात और नैतिकता एल्डरशट: एशगेट प्रकाशन. ro
- 20) Ashley D, Orenstein DM (2005). Sociological theory: Classical statements (6th ed.). Boston, MA, USA: Pearson Education. पृ. 169.